

Quick word tests

तरक्क्री	तरक्की	आह्लाद	आह्लाद	फ्रीज	फ्रीज	मगज़	मगज़	हृत्स्थल	हृत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्ना	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्ज़ूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्ज़े	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट	ईषत्स्पृष्ट	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्प	उत्प	पंक्ति	पंक्ति	उत्सुत	उत्सुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्प	उत्प	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्ज़ाम	रत्न	रत्न	दुर्लभ्य	दुर्लभ्य	सद्गन्थ	सद्गन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्शात	दर्शात	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज़्ज	उज़्ज	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक्क्री	तरक्क्री	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्लाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ़ैक्चर	फ़ैक्चर	हिंस	हिंस	द्रव	द्रव	हास	हास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्र्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रून	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	काँफी	काँफी	रक्त	रक्त	विशाखपटनम	विशाखपटनम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त्र	वक्त्र	ट्रेन	ट्रेन	मंज़ी	मंज़ी	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़्जत	इज़्जत	स्नेह	स्नेह	वक्त्र	वक्त्र	लड्डू	लड्डू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्वां	ध्वां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्ग्रहक	विद्युत्ग्रहक	दीन्हो	दीन्हो	कुरी	कुरी
पद्य	पद्य	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कट्टू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख्त	सख्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्जी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	हूँ	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख्म	ज़ख्म	सपत्न्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़ख़र	फ़ख़र	ल्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्र्यास	अग्र्यास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सैंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

सैंसेक्स, निफ्टी ठिठके,
मिडकैप-स्मॉलकैप में
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा
निकालने पर देना होगा
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की
मेहनत, चीन से आया
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के
सामने लगे 'प्रियंका-
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फ़ैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date: Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date: Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इवेंट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोटा हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढ़ने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोटा हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढ़ने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

पपद्वपवपवद्ववव

पपङ्कपवपवङ्कवव
पपङ्कयपवपवङ्कयवव
पपसपवपवसवव
पपङ्कपवपवङ्कवव
पपहपवपवहवव
पपभपवपवभवव
पपत्मपवपवत्मवव
पपल्जपवपवल्जवव
पपत्थपवपवत्थवव
पपत्भपवपवत्भवव
पपल्मपवपवल्मवव
पपल्थपवपवल्थवव
पपद्यपवपवद्यवव
पपङ्कयपवपवङ्कयवव
पपसपवपवसवव
पपष्टपवपवष्टवव
पपभपवपवभवव
पपष्ठपवपवष्ठवव
पपल्जपवपवल्जवव
पपल्लपवपवल्लवव
पपह्लपवपवह्लवव
पपह्यपवपवह्यवव
पपह्यपवपवह्यवव
पपल्लपवपवल्लवव
पपह्लपवपवह्लवव

पपहुपवपवहुवव
पपहूपवपवहूवव
पपहूपवपवहूवव
पपहूपवपवहूवव
पपहुपवपवहुवव
पपहूपवपवहूवव

पपरुपवपवरुवव
पपरुपवपवरुवव
पपदुपवपवदुवव
पपदूपवपवदूवव
पपदृपवपवदृवव

Vowel sign spacing

पपपंपपपरंपपकंपप
पपपॅपपरॅपपकॅपप
पपपँपपरँपपकँपप
पपपैपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकेपप
पपपैपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकेपप
पपपैपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकेपप
पपपैपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकेपप
पपपैपपरैपपकैपप
पपपेपपरैपपकेपप

पपपापपरापपकापप
पपपिपपरिपपकिपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपौपपरापपकापप
पपपापपरापपकापप
पपपौपपरापपकापप
पपपौपपरापपकापप
पपपौपपरापपकापप
पपपौपपरापपकापप
पपपौपपरापपकापप
पपपौपपरापपकापप
पपपौपपरापपकापप

पपपौपपरापपकापप
पपपौपपरापपकापप
पपपौपपरापपकापप

पपपुपपरुपपकुपप
पपपूपपरुपपकूपप
पपपृपपरुपपकूपप
पपपृपपरुपपकूपप
पपपूपपरुपपकूपप
पपपूपपरुपपकूपप

पपपपपरपपकपप
पपपपपरपपकपप
पपपॅपपरॅपपकॅपप
पपपॅपपरॅपपकॅपप
पपपेपपरैपपकेपप
पपपेपपरैपपकेपप
पपपेपपरैपपकेपप
पपपेपपरैपपकेपप
पपपेपपरैपपकेपप
पपपेपपरैपपकेपप
पपपेपपरैपपकेपप
पपपेपपरैपपकेपप
पपपेपपरैपपकेपप

पपपऽपवपववऽवव
पप?पवपव?वव
पपपःपवपववःवव

Numeral spacing

००००१०१०११
००१०१०११११
००२०१०१२११
००३०१०१३११
००४०१०१४११
००५०१०१५११
००६०१०१६११
००७०१०१७११
००८०१०१८११
००९०१०१९११

Letter-punct spacing

पपक, पवक.
पपख, पवख.
पपग, पवग.
पपघ, पवघ.
पपङ, पवङ.
पपच, पवच.
पपछ, पवछ.
पपज, पवज.
पपझ, पवझ.
पपञ, पवञ.
पपट, पवट.
पपठ, पवठ.
पपड, पवड.
पपढ, पवढ.
पपण, पवण.
पपत, पवत.
पपथ, पवथ.
पपद, पवद.
पपध, पवध.
पपन, पवन.
पपप, पवप.

पपफ, पवफ.
पपब, पवब.
पपभ, पवभ.
पपम, पवम.
पपय, पवय.
पपर, पवर.
पपल, पवल.
पपळ, पवळ.
पपव, पवव.
पपश, पवश.
पपष, पवष.
पपस, पवस.
पपह, पवह.
पपक्र, पवक्र.
पपख, पवख.
पपग, पवग.
पपज, पवज.
पपड़, पवड़.
पपढ़, पवढ़.
पपफ़, पवफ़.
पपय़, पवय़.
पपक्ष, पवक्ष.
पपज्ञ, पवज्ञ.

पपअ, पवअ.
पपओ, पवओ.
पपऔ, पवऔ.
पपम्, पवम्.
पपय़, पवय़.
पपउ, पवउ.
पपऊ, पवऊ.
पपए, पवए.
पपऐ, पवऐ.
पपऐ, पवऐ.
पपऐ, पवऐ.

पपआ, पवआ.
पपओ, पवओ.
पपऔ, पवऔ.
पपक्र, पवक्र.
पपक्र, पवक्र.
पपल, पवल.
पपल, पवल.

पपङ्ग, पवङ्ग.
पपछ्, पवछ्.
पपट्र, पवट्र.
पपट्र, पवट्र.
पपङ्ग, पवङ्ग.
पपट्र, पवट्र.
पपट्र, पवट्र.
पपट्र, पवट्र.
पपट्र, पवट्र.
पपट्र, पवट्र.
पपट्र, पवट्र.
पपट्र, पवट्र.
पपट्र, पवट्र.

पपक्त, पवक्त.
पपरु, पवरु.
पपरु, पवरु.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ट, पवट्ट.

पपद्, पवद्.
पपष्ट, पवष्ट.
पपभ्, पवभ्.
पपष्ठ, पवष्ठ.
पपल्ज, पवलज.
पपह्, पवह्.
पपह्, पवह्.
पपह्, पवह्.
पपह्, पवह्.

पपहु, पवहु.
पपह्, पवह्.
पपह्, पवह्.
पपह्, पवह्.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपहु, पवहु.
पपरु, पवरु.
पपरु, पवरु.
पपदु, पवदु.
पपद्, पवद्.
पपद्, पवद्.

-
पपक; पवक:
पपख; पवख:
पपग; पवग:
पपघ; पवघ:
पपङ; पवङ:
पपच; पवच:
पपछ; पवछ:
पपज; पवज:
पपझ; पवझ:
पपञ; पवञ:
पपट; पवट:
पपठ; पवठ:

पपरू। पवरूः
 पपदु। पवदुः
 पपदू। पवदूः
 पपद्। पवद्ः
 -
 पपक। पवक?
 पपख। पवख?
 पपग। पवग?
 पपघ। पवघ?
 पपङ। पवङ?
 पपच। पवच?
 पपछ। पवछ?
 पपज। पवज?
 पपझ। पवझ?
 पपञ। पवञ?
 पपट। पवट?
 पपठ। पवठ?
 पपड। पवड?
 पपढ। पवढ?
 पपण। पवण?
 पपत। पवत?
 पपथ। पवथ?
 पपद। पवद?
 पपध। पवध?
 पपन। पवन?
 पपप। पवप?
 पपफ। पवफ?
 पपब। पवब?
 पपभ। पवभ?
 पपम। पवम?
 पपय। पवय?
 पपर। पवर?
 पपल। पवल?
 पपळ। पवळ?

pg 10/18

"अपवपअ"**"इपवपइ"****"ईपवपई"****"उपवपउ"****"ऊपवपऊ"****"एपवपए"****"ऐपवपऐ"****"ऎपवपऎवव"****"ऐपवपऐ"****"आपवपआ"****"ओपवपओ"****"औपवपऔ"****"ऋपवपऋ"****"ॠपवपॠ"****"लृपवपलृ"****"लृपवपलृ"****"ङपवपङ्ग"****"छपवपछ्छ"****"टपवपट्ट"****"टपवपट्ट"****"डपवपड्ड"****"डपवपड्ड"****"द्रपवपद्र"****"रुपवपरू"****"हपवपहृ"****"ळपवपळ्ळ"****"क्तपवपक्त"****"रूपवपरू"****"रूपवपरू"****"टपवपट्ट"****"टपवपट्ट"****"ठपवपठ्ठ"****"डपवपड्ड"****"डुपवपडु"****"डुपवपडु"****"दुपवपदु"****"दुपवपदु"****"दुपवपदु"****"दुपवपदु"****"दुपवपदु"****"दुपवपदु"****"दुपवपदु"****"दुपवपदु"****"भपवपभ्भ"****"ष्ठपवपष्ठ"****"ल्जपवपल्ज"****"ल्लपवपल्ल"****"ल्लपवपल्ल"****"ल्लपवपल्ल"****"ल्लपवपल्ल"****"हुपवपहु"****"हुपवपहु"****"हुपवपहु"****"हुपवपहु"****"हुपवपहु"****"हुपवपहु"****"हुपवपहु"****"हुपवपहु"****"हुपवपहु"****"हुपवपहु"****"हुपवपहु"****"हुपवपहु"****"हुपवपहु"****"हुपवपहु"****"हुपवपहु"****"हुपवपहु"**

Num-punct spacing

पवप ₹१०१ वपव

पवप ₹२०१ वपव

पवप ₹३०१ वपव

पवप ₹४०१ वपव

पवप ₹५०१ वपव

पवप ₹६०१ वपव

पवप ₹७०१ वपव

पवप ₹८०१ वपव

पवप ₹९०१ वपव

०००,०१०,०११

००१,०१०,१११

००२,०१०,२११

००३,०१०,३११

००४,०१०,४११

००५,०१०,५११

००६,०१०,६११

००७,०१०,७११

००८,०१०,८११

००९,०१०,९११

०००.०१०.०११

००१.०१०.१११

००२.०१०.२११

००३.०१०.३११

००४.०१०.४११

००५.०१०.५११

००६.०१०.६११

००७.०१०.७११

००८.०१०.८११

००९.०१०.९११

li Vowel sign - base

पपकिपपकिंपपकिंपप

पपखिपपखिंपपखिंपप

पपगिपपगिंपपगिंपप

पपघिपपघिंपपघिंपप

पपङिपपङिंपपङिंपप

पपचिपपचिंपपचिंपप

पपछिपपछिंपपछिंपप

पपजिपपजिंपपजिंपप

पपझिपपझिंपपझिंपप

पपञिपपञिंपपञिंपप

पपटिपपटिंपपटिंपप

पपठिपपठिंपपठिंपप

पपडिपपडिंपपडिंपप

पपढिपपढिंपपढिंपप

पपणिपपणिंपपणिंपप

पपतिपपतिंपपतिंपप

पपथिपपथिंपपथिंपप

पपदिपपदिंपपदिंपप

पपधिपपधिंपपधिंपप

पपनिपपनिंपपनिंपप

पपपिपपपिंपपपिंपप

पपफिपपफिंपपफिंपप

पपबिपपबिंपपबिंपप

पपभिपपभिंपपभिंपप

पपमिपपमिंपपमिंपप

पपयिपपयिंपपयिंपप

पपरिपपरिंपपरिंपप

पपलिपपलिंपपलिंपप

पपळिपपळिंपपळिंपप

पपविपपविंपपविंपप

पपशिपपशिंपपशिंपप

पपषिपपषिंपपषिंपप

पपसिपपसिंपपसिंपप

पपहिपपहिंपपहिंपप**पपक्षिपपक्षिंपपक्षिंपप****पपझिपपझिंपपझिंपप**

[illegible]

pg 13/18

पपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्घपपङ्ङपपङ्चप
पङ्छपपङ्जपपङ्झपपङ्ञपपङ्टपपङ्ठपपङ्प
पङ्पपपङ्णपपङ्तपपङ्थपपङ्दपपङ्धपपङ्नप
पङ्नपपङ्पपपङ्फपपङ्बपपङ्भपपङ्मपपङ्यप
पङ्गपपङ्ङपपङ्ळपपङ्ळपपङ्वपपङ्शप
पङ्षपपङ्स्पपङ्हपपङ्क्कपपङ्खपपङ्गपपङ्जप
पङ्ङपपङ्ढपपङ्फपपङ्यपप

पपफक्कपपफखपपफ्गपपफघपपफङपपफचप
 पफछपपफजपपफझपपफञपपफटपपफठपपफडप
 पफढपपफणपपफत्तपपफथपपफदपपफधपपफनप
 पफत्तपपफपपपफफपपफबपपफभपपफमपपफयप
 पफ्रपपफ्रपपफलपपफळपपफळपपफत्वपपफशप
 पफषपपफसपपफहपपफक्कपपफखपपफ्गपपफजप
 पफडपपफढपपफणपपफत्तपप

पपक्कपपक्खपपक्कापपक्कपपक्क-पपक्कपपक्कप
 पक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्काप
 पक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कप
 पक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कप
 पक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कप
 पक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कप
 पक्कापपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कपपक्कप

पपभक्पपभखपपभगपपभघपपभङ्गपपभचपपभछप
पभजपपभझपपभञपपभटपपभठपपभडपपभढप
पभणपपभत्तपपभथपपभदपपभधपपभनपपभनप
पभयपपभफपपभबपपभभपपभमपपभयपपभ्रप
पभरपपभलपपभळपपभळपपभवपपभशपपभषप
पभसपपभहपपभक्कपपभखपपभगपपभजपपभङ्गप
पभढपपभक्कपपभयपप

पपम्कपपम्खपपम्मापपम्यपपम्डपपम्यपपम्ठप
पम्जपपम्झपपम्जपपम्पपम्ठपपम्डपपम्ठप
पम्णापपम्तापपम्यपपम्दपपम्यपपम्तापपम्यप
पम्फपपम्बपपम्यपपम्मापपम्यपपम्पपपम्पपपम्प
पम्ळपपम्ळपपम्त्पपम्शपपम्यपपम्सापपम्हप
पम्कपपम्खपपम्मापपम्जपपम्डपपम्डपपम्कप
पम्यपप

less common half-forms

पपदकपपदखपपदगपपदघपपदङ-पपदचपपदछप
पदजपपदझपपदञपपदटपपदठपपदडपपदढप
पदणपपदतपपदथपपददपपदधपपदनपपदमप
पदफपपदबपपदभपपदमपप पपदयपपदलप
पदळपपदमपवपपदशपप पपदषपपदसपपदहपप

पपद्धकपपद्धखपपद्धगपपद्धघपपद्धङ-पपद्धचपपद्ध-
छप
पद्धजपपद्धझपपद्धञपपद्धटपपद्धठपपद्धडपपद्ध-
ढप
पद्धणपपद्धतपपद्धथपपद्धदपपद्धधपपद्धनपपद्धपप
पद्धफपपद्धबपपद्धभपपद्धमपप पपद्धयपपद्धलप
पद्धळपपद्धपवपपद्धशपप पपद्धषपपद्धसपपद्ध-
हपप

पपहकपपहखपपहगपपहघपपहङ-पपहचपपह-
छप
पहजपपहझपपहञपपहटपपहठपपहडपपहढप
पहणपपहतपपहथपपहदपपहधपपहनपपहपप
पहफपपहबपपहभपपहमपप पपहयपपहलप
पहळपपहपवपपहशपप पपहषपपहसपपहहपप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङ-पपक्रचप
पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रठप
पक्रडपपक्रढपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप
पक्रथपपक्रनपपक्रमपपक्रमपपक्रबपपक्रमपपक्रमप
पपक्रमपपक्रमपपक्रमपपक्रमपवपपक्रशप
पपक्रमपपक्रमपपक्रमप

पपरूकपपरूखपपरूगपपरूघपपरूङ-पपरूचप
परूछपपरूजपपरूझपपरूञपपरूटपपरूठप
परूडपपरूढपपरूणपपरूतपपरूथपपरूदपपरूधप
परूनपपरूमपपरूफपपरूबपपरूभपपरूमप

परूयपपरूलपपरूलपपरूपपवपपरूशप
परूपपपरूसपपरूहपप

पपग्रकपपग्रखपपग्रापपग्रघपपग्रङ-पपग्रचपपग्रछप
पग्रजपपग्रझपपग्रञपपग्रटपपग्रठपपग्रडपपग्रढप
पग्रापपग्रतपपग्रथपपग्रदपपग्रधपपग्रनपपग्रमप
पग्रफपपग्रबपपग्रभपपग्रमपप पपग्रयपपग्रलपपग्रळप
पग्रमपवपपग्रशपप पपग्रषपपग्रसपपग्रहपप

पपघ्रकपपघ्रखपपघ्रापपघ्रघपपघ्रङ-पपघ्रचपपघ्रछप
पघ्रजपपघ्रझपपघ्रञपपघ्रटपपघ्रठपपघ्रडपपघ्रढप
पघ्रापपघ्रतपपघ्रथपपघ्रदपपघ्रधपपघ्रनपपघ्रमप
पघ्रफपपघ्रबपपघ्रभपपघ्रमपप पपघ्रयपपघ्रलपपघ्रळप
पघ्रमपवपपघ्रशपप पपघ्रषपपघ्रसपपघ्रहपप

पपच्रकपपच्रखपपच्रापपच्रघपपच्रङ-पपच्रचपपच्रछप
पच्रजपपच्रझपपच्रञपपच्रटपपच्रठपपच्रडपपच्रढप
पच्रापपच्रतपपच्रथपपच्रदपपच्रधपपच्रनपपच्रमप
पच्रफपपच्रबपपच्रभपपच्रमपपच्रयपपच्रलपपच्रळप
पच्रमपवपपच्रशपप पपच्रषपपच्रसपपच्रहपप

पपञ्कपपञ्खपपञ्गापपञ्घपपञ्ङ-पपञ्चपपञ्छप
पञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्टपपञ्ठपपञ्डपपञ्ढप
पञ्गापपञ्गतपपञ्घपपञ्दपपञ्धपपञ्नपपञ्मप
पञ्फपपञ्बपपञ्भपपञ्मपपञ्यपपञ्लप
पञ्ळपपञ्मपवपपञ्शपप पपञ्षपपञ्सपपञ्हपप

पपङ्कपपङ्खपपङ्गापपङ्घपपङ्ङ-पपङ्चप
पङ्छपपङ्जपपङ्झपपङ्जपपङ्टपपङ्ठपपङ्डप
पङ्ढपपङ्गापपङ्गतपपङ्घपपङ्दपपङ्धपपङ्नप
पङ्मपपङ्मपपङ्मपपङ्मपपङ्मपप पपङ्मप
पङ्मपपङ्मपपङ्मपवपपङ्मशपपङ्मपपङ्मप
पङ्महपप

पपञ्कपपञ्खपपञ्गापपञ्घपपञ्ङ-पपञ्चप
पञ्छपपपञ्जपपपञ्झपपपञ्जपपपञ्टपपपञ्ठप
पपञ्जपपपञ्घपपपञ्घपपपञ्दपपपञ्धप
पपञ्जपपपञ्मपपपञ्मपपपञ्मपपपञ्मपपपञ्मप
पपञ्मपपपञ्मपपपञ्मपवपपपञ्मशपप पपपञ्मपपपञ्मप
पपञ्मपप

पपण्कपपण्खपपण्गापपण्घपपण्ङ-पपण्चपपण्छप
पण्जपपण्झपपण्जपपण्टपपण्ठपपण्डपपण्ढप
पण्गापपण्गतपपण्घपपण्दपपण्धपपण्नपपण्मप
पण्फपपण्बपपण्भपपण्मपप पपण्मपपण्मप
पण्ळपपण्मपवपपण्मशपप पपण्मपपण्मपपण्मप

पपत्कपपत्खपपत्गापपत्घपपत्ङ-पपत्चपपत्छप
पत्जपपत्झपपत्जपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्ढपपत्गाप
पत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्मपपत्फपपत्बप
पत्भपपत्मपप पपत्थपपत्लपपत्ळपपत्थपवप
पत्शपपत्थपपत्सपपत्हपप

पपश्कपपश्खपपश्गापपश्घपपश्ङ-पपश्चपपश्छप
पश्जपपश्झपपश्जपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप
पश्गापपश्तपपश्थपपश्दपपश्थपपश्नपपश्मप
पश्फपपश्बपपश्भपपश्मपप पपश्मपपश्मप
पश्ळपपश्मपवपपश्शपप पपश्षपपश्सपपश्हपप

पपश्कपपश्खपपश्गापपश्घपपश्ङ-पपश्चपपश्छप
पश्जपपश्झपपश्जपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप
पश्गापपश्तपपश्थपपश्दपपश्थपपश्नपपश्मप
पश्फपपश्बपपश्भपपश्मपप पपश्मपपश्मप
पश्ळपपश्मपवपपश्शपप पपश्षपपश्सपपश्हपप

पपन्कपपन्खपपन्गापपन्घपपन्ङ-पपन्चपपन्छप
पन्जपपन्झपपन्जपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्ढप
पन्गापपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्मप
पन्फपपन्भपपन्मपप पपन्मपपन्मपपन्मप
वपपन्शपप पपन्मपपन्मपपन्मप

पपक्रपपखपपगपपघपपङ्पपचपपछप
पजपपझपपञपपटपपठपपडपपढपपणप
पतपपथपपदपपथपपनपपमपपफपपबप
पभपपमपप पपयपपलपपळपपमपवप
पशपप पपषपपसपपहपप

पपक्रपपखपपगपपघपपङ्पपचपप
पछपपजपपझपपञपपटपपठप
पडपपढपपणपपतपपथपपदपपथप
पनपपमपपफपपबपपभपपमपप
पपयपपलपपळपपमपवपपशपप
पपषपपसपपहपप

पपक्रपपखपपगपपघपपङ्पपचपपछप
पजपपझपपञपपटपपठपपडपपढप
पणपपतपपथपपदपपथपपनपपमपपफप
पबपपभपपमपप पपयपपलपपळपपमपव
पपशपप पपषपपसपपहपप